E पारिस्थितिकी असंतुलन

1. फेयरसर्विस Fairservice जैसे विद्वानों ने ह० सभ्यता का ह्रास पारिस्थितिकी की समस्याओं के रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया है उन्होंने ह० नगरों की आबादी की गणना की है और नगर निवासियों के खाद्य गल्ले का हिसाब लगाया है। उसने गणना की है कि इस समय उस क्षेत्र में ग्राम निवासी अपनी उपज की लगभग 80% खपत स्वयं करते थे और लगभग 20% बाजार में बिकने के लिए बचती थी। यदि कृषि का यही प्रतिमान पहले भी विद्यमान रहा होता तो मो० जैसे नगर को, जिसकी आबादी 35000 थी खाद्यान्न उगाने के लिए बहुत बड़ी संख्या ग्राम निवासियों की आवश्यकता थी।

2. फेयरसर्विस की गणना के अनुसार इन अर्ध शुष्क क्षेत्रों में नाजुक पारिस्थितिक संतुलन इसलिए बिगड़ रहा था क्योंकि उन क्षेत्रों में मनुष्यों और मवेशियों की आबादी अपर्याप्त जंगलों, खाद्यान्नों और ईंधन के स्रोतों को तेजी से समाप्त कर रही थी ह० के नगर निवासियों, किसानों और पशुपालकों की सम्मिलित आवश्यकताएँ इन क्षेत्रों में सीमित उत्पादन क्षमता से अधिक थी इसलिए मनुष्यों एवं पशुओं के बढ़ती हुई आबादी के कारण, सीमित अपर्याप्त स्रोतों का सामना करना पड़ रहा था।

इस क्षेत्र को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा अतः अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ने के कारण धिरे २ लोग उन क्षेत्रों को बसने के भी विवश हुए जहां जिविका की बेहतर सम्भावनाऐं थी।

3. Fairservice का सिध्दान्त युक्ति संगत लगता है सम्भवतः नगर नियोजन और जीवन स्तर में क्रमिक ह्रास हड़प्पा निवासियों के जिविका के आधार समाप्त हो जाने के कारण था ह्रास की यह प्रक्रिया आस-पास के समुदायों के आक्रमणों और छापों से पुरी हुई

4. लेकिन पर्यावरण संकट के सिध्दान्त में कुछ समस्याएं हैं
[I] भारतीय उपमहाद्वीप को उर्वरता बाढ के हजारों वर्षों तक बनी रही इससे इस क्षेत्र में भूमी की क्षमता होने की परिकल्पना उचित सिध्द नही होती
[II] हड़प्पा निवासियों की जरूरत की गणना अल्प सुचनाओं पर आधारित है।

निष्कर्ष - हड़प्पा सभ्यता के अविर्भाव के नगरों, कस्बों, गावों, किसानों, शिल्पकारों, व्यापारियों और खानाबदोशों के बीच सम्बन्धों का नाजुक संतुलन था उनका पड़ोस के क्षेत्रों के उन समुदायों से भी दुर्बल लेकिन महत्व पुर्ण सम्बन्ध थे इसी प्रकार उनका समकालीन सभ्यताओं और संस्कृतियों से भी सम्पर्क बना हुआ था इसके अतिरिक्त उसे प्रकृति से भी सम्बन्ध के लिए पारिस्थितिक पहलू पर भी विचार करना होगा सम्बन्ध की इन श्रृंखलाओं की कोई भी कड़ी टुटने से नगरों के ह्रास का पथ प्रसस्त हो सकता था और यही हुआ।

//